रात्रिक्लास 8-5-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

बाप दादा ने बच्चों को मुखड़ा देखा, बच्चों ने बाप दादा का देखा यह कोई कम बात है क्या। जैसे बाप हाईस्ट है वैसे बच्चे भी हैं। जैसे बाप ऊंच ते ऊंच वैसे बच्चे भी ऊंच ते ऊंच। सारीदुनिया में ऊंच ते ऊंच ते ऊंच बापदादा और बच्चे। इतना फखुर है। यह नशा स्थाई होना चाहिए। हमऊंच ते ऊंच बापदादा के बच्चे तो हम भी ऊंच ते ऊंच। देवताओं से भी ऊंच ठहरे। इतना नशा और ज्ञान बच्चोंकी बुधि में है। बाप ब्र बच्चे भी समझते हैंमेहमान भी समझते हैं। मेहमान के बच्चों को बाप दादा को सम्भाल करनी है। बाबा कह देते हैंमेहमानों की खातरी करना। शिव बाबा का भण्डारा है। यह हैऊंच ते ऊंच शिव बाबा का भण्डारा। बच्चों को जो चाहिए ब्राहमणी को हुकुम करे। ब्रहमणी को फिर सब से पूछना है। बाबा भी वन्डरफुल जिसको कोई भी नहीं जानते। फिर तुमको वन्डरफुल विश्व कामालिक बनाते हैं।।। ज्ञान भी वन्डरफुलकोई की बुधि में बड़ा मुश्किल बैठता है। तुमसुनते हो 5000वर्ष के बाद। जिससे तुम इतना ऊंच पद पाते हो। ज्ञान भी वन्डरफुल पाते हो। अच्छा अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। तो बेरा पार। याद करते2 पार पहूंच जाते हैं। बाप खेवईया भी हैं। भिन्ता ठिक्कर में खुवईया क्या करेंगे। बच्चे समझते हैं शिव बाबा भगवान भी है खेवईया भी हैं। पतित पावन भी हैं। ऊंच ते ऊंच बाप की महिमा भी ऊंच ते ऊंच है। रहने की जगह भी ऊंच है। तुम बच्चों से भी मैं थोड़ा ऊपर रहता हैं। मालूम है? अच्छा बच्चों को गुडनाईट और नमस्ते।

रात्रिक्लास 9-5-68

- - - - - - - सारी पाण्डवसेना है सभी हैं पण्डे। नाम भी पण्डा रखा हुआ है। पाण्डव सम्प्रदाय वह है कौड़व सम्प्रदाय। कबगाये हुये थे। जरूर कहेंगे 5000वर्ष पहलेपाण्डव सम्प्रदाय थे कौड़व सम्प्रदाय भी थे। पाण्डवों की विजय कौड़वों विनाश को प्राप्त हुये। फिर वर्ल्ड कीहिस्ट्री जागराफी रिपीट होता है। इनको नाटक वा ड्रामा कहेंगे। नई दुनिया सो पुरानीपुरानी सो नई। नई में क्या था पुरानी में क्या है सो अभी संगम पर तुम समझरहे हो। पुरानी सु नई बनेगी जरूर संगम ही होगा। सिध होता है वर्ल्ड की हिस्ट्री जागराफी रिपीट। जिसको बच्चे ही जानते हैं। शुद्र सम्प्रदाय नहीं जानते। ब्राहमण सम्प्रदाय जानते हैं। दैवी सम्प्रदाय भी नहीं जानते हैंकि सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है। इसमें मुंझने की दरकार ही नहीं। कहते हैं पतित से पावन बनाओ। अभी बाप कहते हैं तुम पावन थे फिर पतित बने हो। अभी फिर सो पावन बनने पुरुषार्थ करना है। अपनको आत्मा समझो। देह के सभी धर्मत्याग अपन को आत्मा समझो। पतित पावन बाप ही हैं। उसको अविनाशी सर्जन भी कहा जाता है। यह ईश्वरीय सन्देश भत देते हैं। क्या करो। पापात्मा तो बने हो। तमोप्रधान हो अभी मामेकं याद करो तो विकर्म विनाश हो जावेंगे। कल्प2 तुमको राय देता हूं। ड्रामा अनुसार भक्ति में भी जाना ही हैं। भक्ति में पतित बन गये हैं। यहपापात्माओं की दुनिया कहेंगे ना। बेहद के बाप सुप्रीम बाप के हम सन्तान हैं। बाप कहते हैं याद करो जो पावन बनाते हैं। अपन को आत्मा समझ बाप को जो एवर पावन है उनको याद करनाहै। जिसको ही योग अग्नि कहा जाता है। बाप कहते हैं और सभी बातें छोड़ो। कोई भी संशय आये परन्तु पहले तो पावन बनना है ना। पावन बन जावेंगे अपने घर फिर सुखधाम। बाप पुरुषार्थ भी सहज कराते हैं। शान्तिधाम सुखधाम को याद करो। दुःख धाम को भूल जाओ। बाप भी घर से आये हैं। स्थापना कर सभी बच्चों को घर ले जावेंगे। कोई भी बात में मुंझ हो तो ब्राहमणीसमझा सकती है। परन्तु कोई भी संशय नहीं आना चाहिए। यह तो समझते हो बेहद के बाप से बेहद का वर्सा मिलता है। इसलिए उनको याद करते हैं। वही लिबरेटर गाईड भी बनते हैं। बाप कहते हैं मैं गाईड बनतुम बच्चों को घर ले जाता हूं। संशय आने की दरकार ही नहीं। अगर आता है तो माया का वार है। वह संशय मिटा लेना चाहिए। और जबकि बेहद का बाप मिला है तो बापको याददकरने की जरूर खुशी होती है। बच्चे जानते हैं हैं जब कि चित्र है तो जरूर नई दुनिया की बादशाही बाप ही देंगे। बाप आते ही हैं संगम पर। संगम युग पर ही तुम उत्तम

आखिर कोई तो बात होगी। शायद यह चयन इसलिए दिखाई नहीं पड़ रही थी, इसलिए निर्माता-निर्देशकों ने